61st

ANNUAL CONVOCATION CEREMONY

Monday, 17 December 2018

CONVOCATION ADDRESS

by

Dr. D. P. Singh
Chairman
University Grants Commission
New Delhi

Sardar Patel University
University Road
Vallabh Vidyanagar - 388 120
Gujarat

University Press

सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

६१वाँ दीक्षान्त समारोह
१७ दिसम्बर, २०१८

दीक्षान्त उद्‌बोधन

प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली–११०००२

गुजरात के माननीय राज्यपाल तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय श्री ओमप्रकाश कोहली जी, गुजरात के शिक्षणमंत्री माननीयश्री भूपेन्द्रसिंह चुडासमा जी, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. शिरीष कुलकर्णी जी, कार्यवाहक कुलसचिव श्री तुषार मजमूदार जी, विश्वविद्यालय सीनेट एवं सिन्डीकेट के सदस्यगण, अधिष्ठातागण, प्राध्यापकगण, आमंत्रित महानुभाव, अधिकारी व कर्मचारीगण, उपाधि तथा पदक–धारक छात्र–छात्राएँ, मीडियाकर्मी, देवियो–सज्जनो!

मेरे लिए परम गौरव का विषय है कि मैं आज सरदार पटेल विश्वविद्यालय के इकसठवें वार्षिक दीक्षान्त समारोह में आप सबके बीच उपस्थित हूँ। मैं उस धरती और उस आँगन में हूँ जो कि लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की कर्मभूमि के रूप में विख्यात है। यह पावन भूमि किसी तपोभूमि से कम नहीं है, कारण कि यह शिक्षा–दीक्षा का धाम है और जहाँ शिक्षा–दीक्षा का कार्य होता हो, वहाँ हम सबका किसी भी रूप में होना हम सबके लिए गौरवप्रद है।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय भी अभिनंदन का पात्र है क्योंकि अपनी प्रशंसनीय गतिविधियों के बलबूते पर उसे गुजरात राज्य में सबसे ज्यादा अंकों के साथ राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा 'ए' ग्रेड (प्रथम स्थान) प्राप्त है। ऐसे में स्वाभाविक रूप से इस विश्वविद्यालय में अध्ययन और अनुसंधानरत, प्रशिक्षणरत विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को अभिनन्दित करना भी मैं समीचीन समझता हूँ। यह विश्वविद्यालय निरंतर उन्नति के नित नए सोपानों पर पहुँच रहा है। आपको इस विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होने पर गर्व होना चाहिए क्योंकि यह संस्थान संपूर्ण प्रदेष का अग्रणी एवं श्रेष्ठ विश्वविद्यालय है। शिक्षा के विभिन्न आयामों तथा विषयों में ज्ञानार्जन हेतु यह विश्वविद्यालय देश में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है । विगत वर्षों में इस विश्वविद्यालय ने उत्कृष्ट अध्ययन-अध्यापन, प्रखर शैक्षिक उन्नयन, नवोन्मेषी शैक्षणिक पद्धतियों का समावेश कर शैक्षणिक गुणवत्ता में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वास्तव में, शिक्षा-दीक्षा का कार्य व्यवसाय से कहीं ज्यादा एक परम उदात्त ध्येय होता है। इस ध्येय को जीवन में एक पुरुषार्थ के रूप में देखा जाना चाहिए। इसे हासिल करने के लिए संस्थान या प्रतिष्ठान की भूमिका भी अपने आप में उदात्त हो, यह अपेक्षा होती है। स्वयं सरदार वल्लभभाई पटेल का भी मानना था कि शिक्षा प्राप्त कर, नौकरी की तलाश में भटकते नौजवान पैदा करना शिक्षा का लक्ष्य नहीं है। व्यवसाय (प्रोफेशन) एवं उद्देश्य (मिशन) के बीच का अन्तर हमें अच्छी तरह से समझना चाहिए। यदि जीवन के ध्येय उच्च होंगे तो फिर व्यवसाय स्वयं उनका अनुकरण करता नजर आएगा। इसलिए वर्तमान युवा पीढ़ी और आगामी पीढ़ियों को भी इस बात को समझना आवश्यक है कि शिक्षा-दीक्षा को लेकर समर्पण, प्रतिबद्धता, पारदर्शिता, परोपकार-भावना, ईमानदारी, निष्ठा जैसे मानव मूल्यों को प्राथमिकता दी जाय। तभी हम स्वस्थ समाज और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में सही मायनों में भागीदारी कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय एक ऐसा स्थान होता है जहाँ से एकता का सन्देश भी मिलता है। सरदार पटेल को एकता और अखंडता के शिल्पी के तौर पर भी जाना-पहचाना जाता है। यह मानव जीवन का एक कल्याणकारी ध्येय है जिसका सम्बन्ध मानव मात्र की भलाई से जुड़ा हुआ है।

दीक्षान्त का सामान्य अर्थ दीक्षा का अंत होना हो सकता है परन्तु उसका व्यापक अर्थ अत्यन्त विराट है। वास्तव में शिक्षा-दीक्षा तो आजीवन, अबाध गति से चलती रहने वाली एक सनातन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से लगातार गुजरते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहना और मानव हित में सदैव नवीन की खोज करना भी अपने आप में किसी पुरुषार्थ से कम नहीं है। अध्ययन के साथ-साथ अनुसंधान की अनिवार्यता इसीलिए बनी हुई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी अध्ययन और अनुसंधान के समन्वय पर विद्यार्थियों-शोधार्थियों को समय-समय पर दिशा देता रहा है।

आज हम सूचना एवं प्रौद्योगिकी, विज्ञान और तकनीक के युग में जी रहे हैं। इसका मतलब यह भी है कि अब शिक्षा-दीक्षा केवल एकांगी नहीं हो सकती बल्कि वह सर्वांगी हो रही है । एक विद्यानुशासन को अन्य विद्यानुशासनों से जुड़कर चलने की जरूरत से इन्कार नहीं किया जा सकता । इस दिशा में विश्वविद्यालयों में कार्य भी जारी है। कला, साहित्य, विज्ञान, तकनीक का अनूठा संगम और समन्वय निश्चित रूप से नई संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। इन संभावनाओं को तलाशने की प्रक्रिया लगातार चलती रहनी चाहिए। आज व्यापार-वाणिज्य बाजार के क्षेत्र में भी अध्ययन-अनुसंधान की अपार सम्भावनाएँ मौजूद हैं। इन सबका समन्वय करके आने वाली पीढ़ियों के लिए भी रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज अन्तर्विद्यानुशासनीय (इन्टरडिसिप्लिनरी) प्रविधि को अपनाए जाने पर बल दिया जा रहा है। यदि हम अलग-अलग विद्यानुशासनों के बीच तालमेल बिठाकर ज्ञान-विज्ञान की उत्कृष्टता हासिल कर लेते हैं तो सही अर्थों में हम स्वायत्त और स्वनिर्भर होंगे। ऐसे में इस पर ध्यान दिए जाने की जरूरत बनी हुई है।

विख्यात दार्शनिक मनीषी पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि मनुष्य में मौजूद वैचारिक विमर्श एवं चिंतन की क्षमता ही प्रकृति प्रदत्त अलौकिक एवं विलक्षण गुण है। ज्ञान-विज्ञान के समानान्तर ही हमें सांस्कृतिक-आध्यात्मिक उन्नयन से जुड़े हुए मूल्यों को भी साथ लेकर चलना होगा, कारण कि हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन या अनुसंधानरत हैं। युवा पीढ़ी से यह अपेक्षा

रखना कतई अनुचित नहीं होगा कि वह भारतीय जीवन शैली को आदर्श जीवन मूल्यों के अनुरूप ढाले । जो कुछ मानव और जगत के हित में न हो उसे त्यागना ही श्रेयस्कर है और जो कुछ सबके लिए हितकारी है उसे अपनाना भी उतना ही श्रेयस्कर है ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का हमेशा प्रयास रहा है कि आगामी पीढ़ियों की शिक्षा-दीक्षा अपने उच्चतर शिखर पर पहुँचे । उपाधिलक्षी शिक्षा औपचारिक रूप से स्नातक की पहचान दिलाती है परन्तु वास्तविक पहचान तो उपाधि प्राप्त करने के बाद समाज के बीच जाकर बनती है । तभी हासिल की गई शिक्षा-दीक्षा की उपयोगिता भी समझ में आती है। इसलिए, यह दीक्षा का अन्त नहीं है बल्कि नवस्नातकों के लिए एक नई शुरूआत है । मुझे लगता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल के शिक्षा-दीक्षा संबधी विचारों को हम इसी तरह चरितार्थ कर सकते हैं और उन्हें अपने जीवन का आदर्श भी बना सकते हैं । नालंदा और तक्षशिला से लेकर आज तक अब उस मुकाम पर पहुँच चुके हैं जहाँ समय का प्रवाह हमें अपनी योग्यता और कौशल प्रदर्शित करने की चुनौती भी दे रहा है, क्योंकि हम आज वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का आदान प्रदान कर रहे हैं ।

विज्ञान, तकनीकी और सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत विश्व के शीर्षस्थ देशों में विशिष्ट स्थान रखता है जो हम सभी के लिए गौरव की बात है । आपको ज्ञात होगा कि सन १९७५ में भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में छोड़ा था और अब गत वर्ष २०१७ में एक साथ १०४ उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है । परमाणु पनडुब्बी अरिहंत ने भी अपना पहला अभियान पूर्ण कर लिया है । ७५० से ३५०० किलोमीटर तक की जल, थल और नभ की मारक क्षमता वाली यह पनडुब्बी बेहद विश्वसनीय परमाणु प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करती है ।

इस अवसर पर स्मरण करना समीचीन होगा कि आजादी के बाद भारत ने जो वैज्ञानिक संस्थान स्थापित किए हैं उन्होंने देश में वैज्ञानिक प्रतिभाओं के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। BARC, CSIR, IISC, DRDO,

ISRO, IITs सहित कई विश्वविद्यालयों के संस्थानों ने इस हेतु अहम भूमिका निभाई है । यहां के प्रशिक्षित युवाओं ने ना केवल भारत को नाभिकीय भौतिकी, अंतरिक्ष विज्ञान और संचार तकनीकी के क्षेत्र में ना केवल आत्मनिर्भर बनाया है बल्कि दुनिया भर में भारत की श्रेष्ठता का लोहा मनवाया है । सर्वप्रथम नासा तदुपरांत सिलिकॉन वैली में भारतीयों ने अपना वर्चस्व स्थापित करके श्रेष्ठता के सोपानों को छुआ है ।

मेरा ऐसा मानना है कि प्रारंभिक स्तर से ही शिक्षा और विज्ञान की पढ़ाई की ऐसी संरचना हो जो प्रत्येक बालक को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करे, मानवीय मूल्यों से परिचित करवाये तथा विज्ञान का सदुपयोग करने एवं दुरुपयोग रोकने हेतु उन्हें तैयार करे ।

आज प्रत्येक चर्चा-परिचर्चा के स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता पर चिंता-चिंतन हो रहा है । अभी हाल ही में यूजीसी ने इन तमाम पहलुओं पर गहन समीक्षा कर गुणवत्ता अधिदेश प्रसारित किया है जिसके मूल में निहित उद्देश्यों के तहत यूजीसी का मानना है कि -

१. विद्यार्थियों के लिए आरंभिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
२. अध्ययन-निष्कर्ष आधारित पाठ्यक्रम रचना
३. प्रभावी शिक्षण हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना
४. विद्यार्थियों हेतु व्यावहारिक कौशल
५. प्रत्येक संस्थान द्वारा समाज एवं उद्योग से संपर्क, आर्थिक समुन्नति हेतु कम से कम ५ गावों का विकास
६. सभी नए शिक्षकों हेतु आरंभिक प्रशिक्षण तथा सभी शिक्षकों हेतु वार्षिक पुनश्चर्या प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक पाशासकों हेतु नेतृत्व प्रबंधन प्रशिक्षण प्रदान करना
७. शिक्षकों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शोध तथा ज्ञान का सृजन

८. मानवीय मूल्यों एवं व्यवसायगत नीतियों को अपनाने की प्रवृत्ति विकसित करना तथा विद्यार्थियों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल में प्रशिक्षण देना जैसे सामूहिक कार्य, सम्प्रेषण कौशल, नेतृत्व कौशल, समय-प्रबंधन कौशल आदि ।

युवा पीढ़ी को तथा नवस्नातकों को वैश्विक (ग्लोबल) सन्दर्भों को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है । मैं उम्मीद करता हूँ कि सरदार पटेल विश्वविद्यालय शिक्षा-दीक्षा के उदात्त ध्येयों को प्राप्त करने तथा कराने की दिशा में इसी प्रकार से सक्रिय रहेगा ।

आज यहाँ पर जो विद्यार्थी-शोधार्थी उपाधि अथवा पदक प्राप्त कर रहे हैं मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप अपना उज्ज्वल भविष्य तय करने में निष्ठापूर्वक, लगन से परिश्रम करते हुए शिक्षा-दीक्षा के मूल्यों का जतन करेंगे और निरन्तर बेहतर होने के क्रम को जारी रखेंगे । यह भी अपेक्षा है कि आप समाज और राष्ट्र की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे और मानवता के अग्रदूत बनेंगे ।

।। जय हिन्द ।।

अभिस्वीकृति:

यह दीक्षांत उद्‌बोधन विभिन्न स्त्रोतों से संकलित जानकारी के आधार पर विकसित किया गया है । इन सभी के प्रति आभार ।

---

* * *